चौबीस घंटा
सारे समय केवल
महिलाओं के लि
LADIES ONL
FOR ALL THE
TWENTY FOUR

मुंबई का पुन: अवलोकन

लिंग आधारित दृष्टि

शिल्पा फड़के, समीरा खान, शिल्पा रानडे

हालांकि आयोजक बंबई/मुंबई को एक ऐसी ठोस हस्ती समझ कर चले रहे हैं जिसकी सीमाएं निगम का प्रशासन तय करता है लेकिन यह शहर इससे बढ़ कर कुछ और भी है और कभी-कभी इससे कम भी है:वह होता है यहाँ रहने वाले लोगों की संयुक्त कल्पनाओं का योग। बावजूद इसके इस विविधा का प्रतिबिम्ब शहर की योजना में दिखाई नहीं देता है। आज मुंबई अंतर्राष्ट्रीय सामाजिक – राजनैतिक परिदृश्य में अपना एक मूर्त रूप स्थापित करना चाहता है। यह 21वीं सदी में खुद को वास्तविक रूप से एक वैश्विक शहर सिद्ध करना चाहता है। अब प्रश्न उठता है – यह किसका शहर है?

हर एक ऐसा व्यक्ति जिसका कोई भी महत्व है 'विज़न मुंबई' पर अपने विचार व्यक्त कर चुका है।*1 कुछ एक तो मुंबई को सिंगापुर बनाना चाहते हैं और कुछ और प्रेरणा के लिए शंघाई की ओर देखते हैं। यह एक बहुत ही संकीर्ण नजरिया है। क्योंकि ऐसा सोचते समय बढ़ती जनसंख्या को ध्यान में नहीं रखा जाता है।

अनेक निर्णायक और नगर आयोजक यह मान कर चलते हैं कि मुंबई का नागरिक एक अभिन्न, तटस्थ व्यक्ति है जिसकी जरुरतें एकरूप हैं। यह नजरिया बहुत व्यवस्थित तरीके से शहर की जनसंख्या के असुरक्षित हिस्से, बच्चों, शारीरिक रूप से अशक्तों, वृद्धों, झुग्गी-झोंपड़ी निवासियों, बेघरों और फेरी वालों की मौजूदगी को नजरअन्दाज कर देता है। ये वे लोग हैं जिन्हें शहर की संसाधन-सुविधाएं उपलब्ध नहीं हैं। इन सबके बीच पुरुषों के मुकाबले महिलाएं अधिकारों से ज्यादा वंचित हैं।

इस सबके चलते सार्वजनिक स्थान -वे खुले स्थान जहाँ आसानी से पहुंचा जा सकता है, जिसकी कोई कीमत नहीं चुकानी होती -वे कम-कम होते जा रहे हैं। कम होते ऐसे खुले स्थानों के समान्तर उन लोगों की मौजूदगी बढ़ रही है जो यहां के सदस्य ही नहीं हैं। ये लोग हैं गरीब प्रवासी, मुसलमान जिन्हें दिन-ब-दिन बाहरी लोग माना जाता है और सम्भावित उग्रवादी, निम्न वर्ग के वे पुरुष जो औरतों से छेड़छाड़ करते हैं और सब औरतें जो सम्भावित पीड़ित होती हैं।

महानगरों का प्रारूप और योजना तैयार करते समय महिलाओं की विशेष जरूरतों को मद्देनजर नहीं रखा जाता है। ऐसा दुनिया भर में किए गए अध्ययनों से पता चलता है। लिंग और स्थान योजना पर 'पुकार'*2 गत तीन वर्षों से काम कर रहा है। वैकल्पिक विकास से सम्बद्ध भारत-डच योजना द्वारा आर्थिक सहयोग दिया जा रहा है। इस कार्यक्रम के तहत यह अध्ययन किया जा रहा है।

मुंबई के सार्वजनिक स्थानों में लिंग भेद हो रहा है। सार्वजनिक स्थलों पर महिलाओं की संख्या से इस सच्चाई का पता चलता है। चेम्बूर, पाइधोनी और नरीमन पाइंट में हमने गिनती की। दोपहर के वक्त यह संख्या 28 प्रतिशत और पाइधोनी में कम से कम 2.5% रिकार्ड की गई।

सड़कों, बाजारों, रेल्वे स्टेशनों, बस स्टॉपों, बाग-बगीचों, मॉलों, कॉफी शॉपों में महिलाओं के साथ होती घटनाओं पर ध्यान केन्द्रित किया गया है। 'पुकार' का ध्यान सिर्फ उन घटनाओं पर नहीं है जो मीडिया में रिपोर्ट होती हैं। इन्हें सिर्फ घटनाएं न माना जाए। असली मंशा तो शहर से महिलाओं के रिश्ते को समझने की है।

हमने शहर के अनेक हिस्सों में अनेक समूहों से बातचीत की। पाली हिल से काला चौकी, लोखंडवाला से धारावी, मलबार हिल से डोंगरी तक के क्षेत्र में हमने महिलाओं से भेंट वार्ताएं कीं। अनेक वर्गों और समुदायों की महिलाओं से हमने पूछा कि वे हमें बताएं कि वे किन जगहों पर सुरक्षित महसूस करती हैं। हमने उनसे पूछा कि वे कौन -से ढांचागत बदलाव चाहती हैं, कैसी सेवाएं उनकी सुरक्षा और कल्याण बढ़ा सकती हैं।

कोई हैरानी की बात नहीं कि इन महिलाओं द्वारा दी गई जानकारी का बहुत छोटा भाग नई मुंबई की कल्पना को लेकर हो रही बहस में शामिल है। सच तो यह है कि आयोजकों द्वारा प्रस्तावित आदर्श राज्य में महिलाओं द्वारा दिए गए सुझावों की कोई जगह नहीं है। इसका एक उदाहरण है इस महानगर की सारी मुश्किलों का कारण है फेरी वालों और झुग्गी-झोंपड़ियों की मौजूदगी। सच तो यह है कि यही फेरी वाले महिलाओं के मददगार होते हैं। वे लोग एक तरह से मित्रता की भावना रखते हैं। पाली हिल में हुई एक बैठक में एक महिला ने कहा 'भेलपूरी वाले के मुकाबले हमारा चौकीदार बार-बार जल्दी-जल्दी बदलता है।' नरीमन प्वाइंट पर रहने वाली कोरपरेट परिवारों की महिलाओं ने बताया खाने-पीने के सामान के लगे स्टाल हमारे जाने पहचाने हैं। इनके रहते हमें डर नहीं लगता है। शाम अन्धेरा हो जाने के बाद हम सुरक्षित महसूस करते हैं। काला चौकी में रहने वाली महिलाएं काटन ग्रीन रेल्वे स्टेशन से सफर करने वाली महिलाओं ने बताया कि जब से प्लेट फार्म पर चलने वाले तीन स्टाल हटा दिए गए हैं यह जगह अनजानी सी लगती है। फोर्ट क्षेत्र में कामकाजी महिलाएं, चर्चगेट स्टेशन से रेलगाड़ी पकड़ कर घर जाती हैं। उनका कहना है जबसे 2005 में सड़क या प्लेट फार्म पर लगी दुकानों को हटाया गया है रास्ते वीरान हो गए हैं। अन्धेरे में डर लगता है। हम यहां से तेजी से निकल जाते हैं।

जहाँ -जहाँ दुकानें, व्यापारिक संस्थान देर रात तक खुले रहते हैं वहाँ -वहाँ महिलाएं सुरक्षित महसूस करती हैं। इस तरह महिलाएं सार्वजनिक जगहों पर आसानी से आ जा सकती हैं। शहर को आवासीय, व्यावसायिक और औद्योगिक और निजी क्षेत्रों में बांटने से पहले से ही जारी महिलाओं के प्रति चलते लिंग भेद के फलस्वरूप महिलाओं को घर पर रहना पड़ता है। अगर बहु-क्षेत्रीय प्रणाली का पालन किया जाए तो महिलाओं को सार्वजनिक स्थानों पर आने जाने की आसानी हो जाती है। वे कामकाजी या फिर एक उपभोक्ता के रूप में आसानी से सार्वजनिक स्थानों का इस्तेमाल कर सकती हैं। अन्ततः घर और बच्चों की देखभाल अभी भी ज्यादातर महिलाओं की जिम्मेदारी होती है।

नीतिगत और सामाजिक मामलों के साथ-साथ पर्यावरण को बड़े पैमाने पर नजर अन्दाज किया जाता है। वैसे तो बहुत से मसले हैं पर प्रवेश और निर्गम मार्ग, पर्याप्त रोशनी का ध्यान नहीं रखा जाता। इससे महिलाओं को दिक्कत होती है। पार्कों, उपवनों का ही उदाहरण ले लें। साफ-साफ देखा गया है कि बाड़े की ऊँचाई बहुत ज्यादा होती है। बाहर जाने के रास्ते कम होते हैं। इसके चलते महिलाएं बिना पुरुषों के अकेले यहां आना पसन्द नहीं करती हैं।

शहर के वास्तुशिल्प कॉलेजों में शहरी सौन्दर्य की राजनीति में पेड़ों का बड़ा महत्व उभर कर आता है। छात्रों को पटरियां *3 डिजाइन करने को कहा जाता है तो छात्र महसूस करते हैं कि जरूरी नहीं कि जैसी पटरियां वे डिजाइन करें वे उन पर चलना पसन्द भी करेंगे।

छात्रों से पूछा गया वह रास्ता बनाइए जिस पर आप किसी सड़क पर चलना पसन्द करेंगे। सड़क के एक ओर उपवन है, साथ चल रही पटरी के दोनों ओर बाड़ा है और पटरी पर पेड़ भी हैं। शहरी आयोजक इस तरह का डिजाइन पसन्द करते हैं। दूसरी ओर मध्य वर्गीय श्रेणी के लोगों के आवास हैं। उन घरों की कई गतिविधियां सड़क तक पहुंच जाती हैं। यह एक विडम्बना है कि अधिकांश महिला, छात्राएं उन पेड़ों के बजाए आवासों की तरफ चलना ज्यादा पसन्द करेंगी। चाहे वहां कितना भी कूड़ा-करकट क्यों न हो लेकिन उस ओर वे सुरक्षित महसूस करेंगी। जो उपवन की ओर चलेंगी वह भी बाड़ा लगी पटरी पर सुरक्षित महसूस नहीं करेंगी। उनके अनुसार अगर वहां उन पर कोई हमला या छेड़-छाड़ करता है तो उनके लिए भाग निकलना मुश्किल होगा।

साफ-सुथरी, सुनसान जगह आरामदेह और सुरक्षित नहीं मानी जाती है। शहरी सौन्दर्य को लेकर मान्यताओं के विपरीत महिलाएं काफी हद तक अस्तव्यस्त, और भीड़ भाड़ वाली जगहें, जहां ज्यादा पुरुष न हों ज्यादा पसन्द करती हैं। सड़के चाहे कितनी भी सुन्दर क्यों न हो महिलाएं को भीड़-भाड़ वाली सड़कें ज्यादा सुरक्षित लगती हैं। 'विश्व स्तर का शहर' आज आयोजकों की मुख्य चिन्ता बन गई है। इसमें सार्वजनिक स्थानों को साफ -सुथरा बनाने की प्रमुख कल्पना की जा रही है। शहरी योजना पर हो रही बहस काफी ज्यादा जटिल है। ज्यादातर महिलाएं चाहती हैं कि और बेहतर शौचालय हों, बढ़िया रोशनी हो, ऐसे सार्वजनिक बेहतर मनोरंजन स्थल हों जो सड़क से नजर आएं और नजदीक हों। जब तक यह सब नहीं होता तब तक तटस्थ मध्यम नागरिकता सिर्फ उच्च वर्ग, उच्च-जातीय वर्ग, शारीरिक रूप से सशक्त और पुरुषों के ही लिए ही उपयुक्त रहेगी।

हमें अपनी बातचीत में पता चला कि महिलाएं बहुत सक्रियता से ऐसे तरीके ढूंढ लेती हैं जिनसे वे सार्वजनिक स्थानों में आसानी से आ जा सकें। वह 'अच्छी' महिलाओं के रूप में पेश आती है। महिलाओं को जरूरी नहीं कि ढांचागत तरीकों या पुलिस की मदद से ही सुरक्षा मिलती है। यह तो उन्हें हर दिन खुद ही मुहैया करवानी होती है। इसके लिए महिलाओं ने खुद ही तरीके ईजाद किए हैं। इन तरीकों में शामिल है अपने साथ मिर्ची के स्प्रे रखना, अपने मोबाईल को नजदीक रखना, अकेले बाहर नहीं जाना या किसी पुरुष को साथ ले जाना। बड़े थैले साथ रखना, अपने लिबास पर ध्यान देना और अजनबियों से नजरें न मिलाना भी कुछ तरीके हैं जिनके चलते महिलाएं सुरक्षित रह सकती हैं।

बेशक महिलाएं अपने पड़ोस में खुद को सुरक्षित महसूस करती हैं। इन जगहों में लोग उन्हें जानते – पहचानते हैं। पर इसका यह मतलब नहीं कि वे सार्वजनिक स्थानों पर आसानी से आ -जा सकती हैं। दरअसल जिन स्थानों पर वे पहचानी जाती हैं वहां पहुंच सीमित हो जाती है। हर तरह की चालों, झुग्गी – झोपड़ियों, इमारतों और आवासीय सोसाइटियों में एक ही या एक जैसे समुदाय के लोग रहते

हैं। बाहरी समुदायों के मुकाबले यहां रहने वाली महिलाओं को आने -जाने में काफी दिक्कतें होती हैं। इन्हीं पड़ोसों में अविवाहित और तलाकशुदा औरतों-या फिर वह जो सामाजिक तौर-तरीकों को नजरअन्दाज करती हैं – को विरोध और परेशानी का सामना करना पड़ता है। ऐसा उनके साथ बाहरी स्थानों की जगह अपने पड़ोस में ज्यादा होता है। सार्वजनिक स्थानों पर महिलाओं के लिए सुरक्षा का मुद्दा इतना गम्भीर नहीं है जितना घर के भीतर होने वाली हिंसा का है। उनके अपने ही घर उनके लिए सबसे ज्यादा खतरनाक होते हैं *4

वास्तविकता तो यह है कि मुंबई में बड़ी तेजी से सार्वजनिक स्थान कम होते जा रहे हैं। सरकार ने इसमें कोई रुचि नहीं दिखाई है *5 सार्वजनिक स्थानों की जगह मॉल, कॉफी शॉप और नाइट-क्लब बन रहे हैं। सिर्फ कहने भर को ये सार्वजनिक निजी स्थान हैं जो सबके लिए खुले हैं। पर सच तो यह है कि यहाँ विश्वव्यापी आधुनिकता का निर्माण हो रहा है। जहाँ गिने-चुने लोग, विशेष रूप से दृश्यमान महिलाएं होतो है।

एक खास किस्म की महिलाओं – मध्यवर्गीय आदरयोग्य महिलाओं – की सुरक्षा की मांग को व्यापक स्तर पर समर्थन मिलता है। इस तरह की सुरक्षा का समर्थन मीडिया, बड़े व्यापारिक घराने, पुलिस, सरकारी संस्थाएं और कार्यकर्ता सभी करते हैं। व्यावसायिक और उपभोक्ता श्रेणी में आने वाली महिलाओं की मौजूदगी साफ नजर आती है और यह मौजूदगी वैश्विक शहर की परिकल्पना के लिए जरूरी है। यह सिर्फ सुरक्षा की ओर संकेत नहीं करता - यह आधुनिकता की ओर भी इशारा करता है।

जैसे -जैसे और ज्यादा महिलाएं शिक्षित हो रही हैं और वेतन भोगी बन रही हैं वैसे वैसे वह लोगों को नजर आ रही हैं और वे सहगामी स्तर पर सार्वजनिक स्थानों पर नजर आने लगी हैं इस वजह से प्रतिबंधक सीमाएं लगानी जरूरी हो गई हैं। *6 बेशक महिलाएं बाहर जाते समय आराम से जाना चाहती हैं पर वे अपने ऊपर कोई बंदिश भी पसन्द नहीं करती हैं। वे सुरक्षा चाहती हैं पर निगरानी नहीं। हर रोज होने वाली हिंसा से वे सुरक्षा चाहती हैं पर ऐसा भी नहीं कि यह सुरक्षा कुछ गिने चुने वर्ग की महिलाओं को ही मिले। हर श्रेणी, वर्ग, व्यवसाय - चाहे वह महिला सैक्स वर्कर हैं या फिर बार डान्सर, स्पैगेटी स्ट्रेप वाली ड्रेस पहनने वाली – या फिर साड़ी, बुरका पहनने वाली सभी महिलाओं को सुरक्षा चाहिए। महिलाएं ही क्यों? शहर को तो सबका स्वागत करना है। यह सुनिश्चित करना है सब लोगों के साथ- साथ शहर सब महिलाओं के लिए सुरक्षित है।

जेन्डर एंड स्पैस योजना के सदस्य चाहते हैं कि मुंबई ऐसा शहर बने जहां हर नागरिक सार्वजनिक स्थानों में आ जा सकें। हम जैसे-जैसे मुंबई शहर के बारे में दोबारा सोचते हैं वैसे-वैसे हमें महिलाओं के अधिकारों का ध्यान आता है। उनकी सुरक्षा के अधिकारों के अलावा उन्हें एक अर्थपूर्ण नागरिकता का अधिकार मिलना भी जरूरी है।

संदर्भ:

1) फडके, शिल्पा: यू कॅन बी लोन्ली इन अ क्राउड. द प्रोडक्शन ऑफ सेफ्टी इन मुंबई इन इंडियन जेन्डर स्टडीज.
2) न्यू दिल्ली: सेज, फेबुवारी 2005 खान, समीरा ॲन्ड शिल्पा फडके, 'वाकिंग ऑन द स्ट्रीटस इजन्ट स्ट्रीट वाकिंग' हिन्दुस्तान टाइम्स, मुंबई, ऑगस्ट 2, 2005
3) खान, समीरा, शिल्पा फडके एंड शिल्पा रानडे, 'वूमन वॉन्ट ब्राइट लाइटस, सेफ पार्कस एंड फिमेल कोप्स " इन द सन्डे टाइम्स ऑफ 30 जॅन., 2005.

टिप्पणी:

*1 बॉम्बे फर्स्ट के लिए एक अन्तर्राष्ट्रीय सलाहकार कंपनी मेकिन्से ने 'विज़न मुंबई' रिपोर्ट तैयार की थी। बाद में राज्य की विलासराव देशमुख की सरकार के लिए इसे

आगे बढ़ाया गया था। यह 2004-2005 में शहर की शक्ल बदलने का प्रोग्राम था।

*2 (पुकार) पार्टनर्स फॉर अर्बन नॉलेज, ॲक्शन एंड रिसर्च मुंबई में स्थित एक अनुसन्धानशाला है। यह एक गैर लाभकमाऊ अनुसन्धान केंद्रित संस्था है। इसका लक्ष्य है शहरीकरण और विश्व पर बहस करवाना अधिक जानकारी के लिए देखें www.pukar.org.in

*3 मुंबई के अनेक कॉलेजों में अनुसन्धान के अलावा लिंग और स्थान योजना का ध्यान शिक्षा शास्त्र और लम्बे और छोटे पाठ्यक्रमों पर केन्द्रित किया जाता है। इनका विषय रहता है लिंग और सार्वजनिक स्थान

*4 एकत्रित किए गए आंकड़ों से पता चलता है कि महिलाओं के विरुद्ध होने वाली हिंसा उनके अपने घरों में ज्यादा और सार्वजनिक स्थानों पर कम होती है।

*5 2006 में जब कपड़ा मिलें बन्द हो जाने के बाद सेन्ट्रल मुंबई में 700 एकड़ जमीन उपलब्ध हो गई थी मुंबई उच्च न्यायालय ने कहा था कि एक तिहाई जमीन को सार्वजनिक स्थान और शेष पर कम कीमत के मकान बनाए जाएं। सुप्रीम कोर्ट का फैसला था कि इस जमीन को लाभ के लिए बेच दिया जाए।

*6 उदाहरण के लिए शहर के अनेक कॉलेजों और मुंबई विश्वविद्यालय की छात्राओं के लिए लगाए गए ड्रेस कोड से महिलाओं द्वारा पहने जा रहे कपड़े चिन्ता का विषय बन गए हैं।

अनुवादक : सरोज वशिष्ठ

■ ■ ■ ■ ■